गंगा नदी

भारत में नदी को माता कहते हैं। क्योंकि नदी के कारण मिट्टी उपजाऊ होती है। सिंचाई होती है। बहुत अनाज पैदा होता है। गंगा उत्तर भारत की एक बड़ी नदी है। आर्यों के बड़े-बड़े साम्राज्य गंगा के किनारे स्थापित हुए थे । आज भी भारत के अधिकांश नगर इसी के किनारे बसे हैं ।

कहते हैं कि ईक्ष्वाकु वंश के राजा भगीरथ अपने साठ हज़ार पूर्वजों का उद्धार करने के लिए ही गंगा को पृथ्वी पर लाए थे । गंगा का उत्पत्तिस्थान गंगोत्री है, जो केदारनाथ से लगभग ४० किलोमीटर आगे और लगभग पाँच हजार मीटर की ऊँचाई पर स्थित एक 'बर्फ का पहाड़' है । यहाँ पहाड़ों पर जमी बर्फ पिघल-पिघलकर नदी के रूप में नीचे की ओर बहना आरंभ करती है । हिमालय पर्वत से बहने वाली इस नदी को 'भागीरथी' कहते हैं । पर्वतों के बीच कूदती-फाँदती तथा अठखेलियाँ करती भागीरथी बड़े वेग से नीचे उतरती है ।

रुद्रप्रयाग में आकर वह अलकनंदा से मिलकर 'जाह्नवी' कहलाती है और वहाँ से ऋषिकेश पहुँचती है । ऋषिकेश से दस किलोमीटर नीचे हरिद्वार है । हरिद्वार में गंगा समतल मैदान में आती है, फिर आगे बढ़ती हुई प्रयाग पहुँचती है । प्रयाग के पास इसमें यमुना नदी आकर मिलती है । कहा जाता है कि सरस्वती नदी भी अदृश्य रूप में यहीं मिलती है । इस स्थान को 'त्रिवेणी-संगम' कहते हैं । कुछ लोग इसे 'तीर्थराज प्रयाग' भी कहते हैं। प्रत्येक बारह वर्ष पर यहाँ कुंभ का मेला लगता है । कुंभ के अवसर पर यहाँ करोड़ों व्यक्ति संगम में स्नान करते हैं । गंगा का जल बड़ा पवित्र है । इसके रखे हुए जल में कई सालों तक भी कीड़े नहीं पड़ते ! प्रयाग के बाद गंगा बिल्कुल शांत-गंभीर दिखाई देती है ।

कितनी प्राचीन है गंगा ? हमारे देश के सारे इतिहास को इसने अपने सामने बनते देखा है । गंगा दीर्घकाल से बहती आ रही है और बहती रहेगी । इतिहास या भूगोल की किसी घटना से बँधकर यह रुक नहीं जाती । बहना ही इसका जीवन है ।

प्रयाग से गंगा बहती हुई वाराणसी पहुँचती है इसके किनारे अनेक पक्के घाट बने हुए हैं। सवेरे-शाम अनेक लोग गंगा में नहाते है। नदी जनजीवन का कितना उपकार करती है, यहीं देखा जा सकता है।

वाराणसी से बहती हुई गंगा बिहार पहुँचती है और वहाँ गंडक, कोशी तथा घाघरा की धारा को अपने में समेटती हुई, राजमहल की पहाड़ियों से टकराती हुई बंगाल में प्रवेश करती है। फिर यह ब्रह्मपुत्र से मिलकर अनेक धाराओं में बँटकर बंगाल की खाड़ी में गिर जाती है।

गंगा हमें जीवन का एक बड़ा ही महत्वपूर्ण संदेश देती है और वह है-

रुक जाना ही मर जाना है।
बढ़ते रहना ही जीवन है।।